बोड़ो की समाज-संस्कृति और उसमें हुए परिवर्तन

सुर्जलेखा ब्रह्म
शोधार्थी, हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक

शोध सारांश :
संस्कृति किसी भी जाति-जनजाति की विशेषताएँ बतलाने का कार्य करती है। भाषा, धार्मिक आस्था, पर्व-त्योहार, रहन- सहन के तौर-तरीके, खान-पान, परंपरागत आचार-विचार एवं मान्यताएँ यह विश्व समुदाय में अपनी एक अलग पहचान प्रस्तुत करती है। बोड़ो असम में रहनेवाली प्रमुख जनजाति है। यह असम के ब्रह्मपुत्र घाटी के आसपास, बंगाल के कुछ क्षेत्रों से होते हुए नेपाल के झापा तक फैले हुए हैं। जंगलों, नदियों के आसपास रहनेवाले प्रकृति प्रेमी बोड़ो जनजातियों के पास अपनी एक समृद्ध संस्कृति है। इनकी रंगीन पोशाक, गायन, वादन, लोकगीत, लोकनृत्य पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है। वहीं आज हमें बोड़ो समाज में कई बदलाव भी देखने को मिलते हैं। आधुनिकता के इस युग में बदलाव शब्द कोई नयी नहीं है। बोड़ो समाज ने भी आज कई पुरानी मान्यताओं को तोड़कर नयी मान्यताओं को आत्मसात कर लिया है।

बीज शब्द :
बोड़ो, समाज, संस्कृति, जनजाति, पारंपरिक चिह्न, बाथौ पुजा, खेराई पुजा

भारत एक ऐसा देश है जहाँ कई जाति-जनजाति के लोग वास करते हैं। अलग-अलग रूप-रंग, संस्कृति के लोग होने के बावजूद भी यह एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं तभी तो भारत को अनेकता में एकता का देश कहा जाता है। बोड़ो भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत 'चीनी तिब्बती भाषा परिवार' के अंतर्गत आती है। ग्रियर्सन ने भी अपनी पुस्तक 'लिंगुइसिटिक सर्वे ऑफ इंडिया' में बोड़ो जनजाति को चीनी-तिब्बती भाषा परिवार के अंतर्गत बताया है। कई और भी विद्वानों का मानना है कि इस जनजाति के लोग चीन, तिब्बत से होते हुए भारत में प्रवेश किया था, जबकि स्वामी विवेकानंद का कहना है "इंडो यूरोपियन आर्य बाहर से आकर बसे हुए नहीं है। किसी भी लोककथा, वेद-वेदान्त और शास्त्रों में भी आर्यों का किसी दूसरे स्थान से आकर बसने का कोई उल्लेख नहीं है।"[1]

ब'ड शब्द का अर्थ है 'ज्ञान या होश'। बोड़ो जनजातियों के लिए 'बोड़ो कोछारी' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। पंडितों के अनुसार ति-बद् के बद् शब्द से बड और बड़ शब्द का आगमन हुआ और संस्कृत के कक्षवाट से कक्षात, कच्छत, कच्छर होता हुआ कछारी शब्द आया।

बोड़ो समाज एवं बोड़ो संस्कृति की विशेषताएँ :

1. **धर्म -** धर्म किसी भी समाज, जाति-जनजाति विशेष का एक अभिन्न अंग है। जैसा कि हम जानते हैं कि धर्म लोगों के विश्वास और आस्था का एक स्वरूप है। बोड़ो जनजाति के परंपरागत धर्म 'बाथौ' है। बाथौ धर्म में बाथौ का जहां पूजा किया जाता है वहाँ 'सिजौ' पेड़ का होना अत्यंत आवश्यक है। बाथौ धर्म में किसी मूर्ति की पूजा नहीं की जाती बल्कि अपने पूर्वजों की पूजा की जाती है। जिनमें से प्रमुख है बाथौ बोराइ, आइलें, खाजि, आबरा खुंगुर, आग्रां, खैला, राज फुथुर, राज खान्द्रा, सालि जोमोन, मोसा राजा, आइ मानासो, आइ बावली, खुबीर, माव थानश्री, संराजा, बुली बुरि। परंतु आज बदलते आधुनिकता के साथ बोड़ो समाज में धर्म कई विभागों में बंट चुका है जैसे किसी ने ब्रह्म धर्म का आत्मसात कर लिया है तो किसी ने ईसाई धर्म। कहा जाता है कि ब्रह्म धर्म का प्रचार सर्वप्रथम 'गुरुदेव कालीचरण ब्रह्म' ने किया था।

संबन्धित होने के कारण चावल (भात) का सेवन ही उपयुक्त मानते हैं। घर पर ही चावल से घरेलू मदिरा तैयार करना इस जनजाति में वर्षों से चली आ रही परंपरा है। जिसे 'जौ' या 'जुमाई' कहा जाता है। इस जनजाति में अधिकतर उबले हुए हरी साग-सब्जियों का प्रयोग करते हैं। यह अधिकतर सादा कम मशाला वाला खाना ही पसंद करते हैं। इनकी मुख्य पसंदीदा खाद्य में सूअर का माँस प्रमुख है। अधिकतर घरों में सूअर का पालन-पोषण भी किया जाता है। शाकाहारी जैसे सुखी हुई जूट की पत्तियाँ, सुखी हुई मुली, मांसाहारी जैसे सूखी मछली, सूखी मांस का सेवन प्रायः बोड़ो परिवारों में देखने को मिलता है। सूखी मछलियों को 'ना गोरान' और सूखी मांस को 'बेदर गोरान' कहा जाता है। सूखे मछलियों को कच्चू के पत्ते, नींबू के पत्ते से कूटकर एक-दो महीने के बाद खाना भी इनका एक मुख्य खाद्य है जिसे 'नाफाम' कहा जाता है। साथ ही घरेलू सोडा बनाने में यह काफी माहिर है जो केले के पेड़ के राख से बनाया जाता है जिसे 'खारोई' कहा जाता है। पिसे हुए चावल के साथ कोमल बाँस का सेवन भी इनका प्रधान खाद्य है जिसे ओनला 'खारोई' कहा जाता है।

3. **पहनावा और आभूषण –** साज सज्जा किसी भी व्यक्ति को एक दूसरे से अलगाती है। इनके पारंपरिक पोशाक अकसर घर पर ही हाथों से बुने हुए होते हैं। जिसे बोड़ो महिलाएँ स्वयं घर पर बनाया करती है। जो बोड़ो महिलाओं की प्रतिभा का प्रमाण देती है।

इनकी पारंपरिक चिह्न की बात करे तो 'आरोनाई' इनका पहचान है। जिसे सम्मानित अतिथि के सम्मान के प्रतीक के रूप में व्यवहार किया जाता है। दूसरी और स्त्रियों के लिए 'दोखोना' और 'फासरा' का प्रयोग किया जाता है तो पुरुषों के लिए गामसा, फालि का प्रयोग होता है। 'आगोर दोखोना' (हाथों से बना डिज़ाइन) जिसे स्त्रियाँ कई रंगो और डिज़ाइनों में बनाती है उनके दोखोनाओं को काफी आकर्षक बनाती है। ये आगोर कई प्रकार के होते हैं जैसे आगोर गिदीर (बड़ी कढ़ाई), फारौ

मेगोन (कबूतर की आँख), दावराय मोक्रेब (मोर का पलक झपकाना), दावसा मोक्रेब (मुर्गी का पलक झपकाना), मावजी आगान (बिल्ली के पेड़ के निशान), गान्दोला आगोर (तितली कढ़ाई), हाजो आगोर (पहाड़ की कढ़ाई), डिंगकिया आगोर (ढेकिया साग)।

परंपरागत रूप से बोड़ो विभिन्न प्रकार के गहनों का प्रयोग करते हैं जैसे फुलकुरी सोना (एक प्रकार का कान में पहननेवाला झुमका), आसान (चूरियां), नाफाखुल (नथ या नथुनी)।

4. **पर्व-त्योहार –** पर्व-त्योहार किसी भी समाज के सांस्कृतिक जीवन को दर्शाने का एक आवश्यक आयाम है। बाथौ पुजा, खेराई पुजा इनके त्योहारों में सबसे महत्वपूर्ण है जहां वह अपने सांस्कृतिक वाद्य यंत्रों के सहारे पूर्व-पुरुषों को पुकारते हैं और उनकी पुजा-अर्चना करते हैं। इस पुजा के अंतर्गत बली का भी प्रयोग किया जाता है। यह पुजा करवाने वाले पंडित को 'दउदिनी' कहा जाता है। साथ ही जैसा कि हम जानते हैं कि बोड़ो अधिकतर कृषि से संबन्धित है। वह कृषि से संबन्धित बैसागू (बीहू) के तीनों रूपों का पालन भी बड़ी ही धूमधाम से करते हैं।

5. **वाद्य यंत्र -** बोड़ो समाज में एक अनोखे तरह की वाद्य यंत्रो का प्रयोग किया जाता है। 'खाम', 'सिफुंग', 'सेरजा', 'जोथा', 'जाबखृंग' यह बोड़ो जनजाति की सबसे महत्वपूर्ण वाद्य यंत्रों में से है। जिसे वह 'बैसागू नृत्य', 'खेराई पुजा', 'गारजा पुजा' 'शादी-विवाह' आदि सभी में प्रयोग करते हैं।

6. **हस्तशिल्प एवं कला-** हस्तशिल्प एवं कला वर्षों से चली आ परंपरागत संस्कृति है। बाँस एक ऐसी सामग्री है जिसे बोड़ो जनजाति आय-दिन व्यवहार करते हैं। कई लोगों के घर, घरेलू वस्तु छलनी, पंखा, ओखली या ओखल और मछली पकड़ने के अधिकतर उपकरण (सेन, जेखाई, खोबाई) बांस से ही निर्मित किए जाते हैं। कृषि उपकरण हल (नांगोल), जुगल भी बाँस से ही तैयार किए जाते हैं। बोड़ो महिलाएं कपड़े बुनने में काफी माहिर होती हैं। बुनाई की सामाग्री जैसे बुनाई के लिए जिन चार खुटिया की जरूरत पड़ती है (साल खूनतिया), कपड़े लपेटनेवाला (गानडोई), चरखा (जोतोर), सुता लपेटनेवाला (मुसुरा), गोनशी आदि कई वस्तुए बाँस से निर्मित किए जाते हैं।

समाज और संस्कृति में हुए परिवर्तन :

1. **धर्म -** आज बोड़ो समाज में धर्म कई भागों में बंट चुका है। किसी ने ईसाई तो किसी ने ब्रह्म धर्म ग्रहण किया है। कहा जाता है कि ब्रह्म धर्म का प्रचार गुरुदेव कालीचरण ब्रह्म ने किया था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आधुनिकता की चपेट से बोड़ो समाज में काफी परिवर्तन हुआ है।
2. **पर्व-त्योहार -** भागमभरी के इस दौर में समय की कमी आज बहुत बड़ी समस्या है। न तो आज किसी के पास अपनों से चैन से बात करने को समय है और न ही वक़्त बिताने को। ऐसे में पर्व-त्योहारों का आयोजन काफी संख्या में कम होने लगा। आधुनिकता के चलते लोगों में ईश्वर की आस्था और विश्वास भी काफी मात्रा में कम होने लगा है। लोग कम से कम अपने घरों तक सीमित रहकर ही पूजा-पाठ का समापन करते हैं। बैसागू (बीहू) आज आधुनिक तरीके से मनाई जाने लगी है।
3. **खान-पान -** खाद्य सामग्री किसी भी व्यक्ति के लिए जरूरी है। समय के साथ-साथ आज बोड़ो जनजातियों में भी मसालेदार खाने की आदत पड़ गयी है। घी, बटर, तेलीय खाद्य आज कई घरों में आम बात हो गयी है। घरेलू सोडे के बदले लोग आज बाज़ारों में उपलब्ध सोडा का प्रयोग करने लगे हैं।
4. **पहनावा-आभूषण -** बदलते समय के साथ हर चीज का बदलाव जरूर आता है। बोड़ो महिलाएं जहां स्वयं अपने लिए बुनाई किया करती थी। वह आज धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। आज कपड़े मशीनों में बुनी जा रही है। मशीनों में बनी रंग-बिरंगी फूलों वाली रंगीन कपड़े को अधिक पसंद किया जाने लगा है। जिसके चलते ग्रामीण स्त्रियों के हाथों से बुने हुए पोषाकों की कीमत बाज़ारों में कम होती जा रही है।
5. **वाद्य-यंत्र** –आज पहले की तरह लकड़ी से बनी वाद्य-यंत्र उपलब्ध नहीं होता। सिफ़ुंग (बांसुरी), सेरजा जैसी वाद्य यंत्र आज प्लास्टिक से बना हुआ का इस्तेमाल किया जा रहा है। शादी विवाहों में परंपरागत लोकगीत का प्रयोग न कर डीजे, डिस्को, बॉलीवुड के गानों को शौक से बजाया जाने लगा है।
6. **हस्तशिल्प एवं कला** - हस्तशिल्प की बात करें तो हम वाकिफ है कि मशीनों के आने के बाद हाथों की मेहनत भारी मात्रा में कम हो चुकी है। बोड़ो समाज में भी आज जैसे बाज़ारों में बनी-बनाई सामाग्री का ही उपयोग अधिक मात्रा में देखने को मिलता है। झारू, पंखा आज बाज़ारों में ही उपलब्ध है। कपड़ों की बुनाई से पहले का कार्य भी आज मशीन में कर लेने के बाद घर पर बुना करते हैं।

निष्कर्ष - संस्कृति हमें एक अलग पहचान देती है इसीलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि हम अपनी संस्कृति की रक्षा करें। उसे फलने और फूलने का अवसर प्रदान करें। हालांकि बोड़ो समाज अपनी परंपरागत संस्कृति के लिए जाना-जाता है लेकिन बदलते समय के साथ काफी कुछ परिवर्तन भी जरूर हुए हैं। हमने देखा कि कई धार्मिक उत्सव, तौर-तरीके काफी बदल चुके हैं। अतः बदलते समय के साथ पुरानी मान्यताओं को सहेजना भी हमारा धर्म है।

संदर्भ :

1. नार्जारी, भबेन, (संपा) बोड़ो कछारीर समाज आरू संस्कृति,चिरांग पब्लिकेशन बोर्ड, काजलगाँव, संस्करण-2005, पृष्ठ संख्या- 6